'सोता मन कस जागे भाई'

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश जनवरी1965 में प्रकाशित प्रवचन)

संगति से सुख उपजे कुसंगति से दुख हो। कहे कबीर तहाँ जाइये साध संगत जहाँ हो॥
संगत कीजै सन्त की जिन का पूरा मन। अनतोले ही देत है नाम सरीखा धन॥
कबीर संगत साध की जौ की भूसी खाय। खीर खांड भोजन मिले साकत संग न जाय॥
ऋद्धि सिद्धि मांगूं नहीं, मांगूं तुम से यह। निस दिन दर्शन साधु का, कहे कबीर मोहि दे॥

अभी आपने कबीर साहब के दोहे सुने। इसमें सबसे पहले जिस बात की ताकीद की जाती है कि सत्संग में रहो। सत्संग किसको कहते हैं ? जहां सत्य और असत्य का निर्णय हो, जहां छिलके से दाने को अलेहदा निकाल के रक्खा जाय, जहाँ विवेक का राज हो और लोगों को विवेक वाली आँख दी जाय। तो आपको यह कहना ही पड़ेगा कि जिस संगत की यह तारीफ की है, वहां कोई विवेक वाला पुरूष ही हो, जिसने सत्य और असत्य का निर्णय किया हो, उसी की संगत हमें यह चीज दे सकेगी ना ! तो सत्संग की यह तारीफ की गई है —

जहं सत्गुर तहं सत्संगत बनाई।

जहां कोई सत्स्वरूप हस्ती है। सत्गुरू किसको कहते हैं ?

'सत्गुरू सत् सरूप है।'

सत्गुरू उसको कहते हैं, जिसकी आत्मा मन-इन्द्रियों से आजाद होकर, अपने आपका अनुभव करके, सत् के साथ लगकर, सत् का स्वरूप हो गई, उसका नाम है सत्गुरू। गुरू अर्जन साहब ने और तारीफ फरमाई, खोलकर ज्यादा।

सत्पुरूष जिन जानेया सत्गुर तिस ना नाओं।

जिसने सत्पुरूष को जान लिया, सत्गुरू उसका नाम है। कोई जान ले। जो सत्पुरूष, सत्नाम को जान गया वह सत्गुरू।

तिनके संग सिख उद्धरे नानक हर गुन गाओ।

उसकी सोहबत में सिख का उद्धार हो सकता है। जिसने खुद सत्पुरूष को नहीं पाया, तुमको कैसे मिलायेगा ? जो खुद मन-इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, दुनियां का रूप बना बैठा है, अन्दर से सो रहा है, वह तुमको कैसे मिलायेगा ? उनके मिलने से क्या होता है ?

सत्गुर मिले तां अख्खी वेखै। घरे अन्दर सच पाये॥

जब सत्स्वरूप हस्ती मिलती है, तो क्या होता है ? आँखों से देखने वाला बन जाता है। वह तो देखता ही है —

नानक का पादशाह दिस्से जाहिरा।

वह देख रहा है, सिख भी —

सो गुरमुख वेखै नैनी।

सिख भी गुरूमुख होकर देख सकता है। गुरूमुख किसको कहते हैं ?

जो गुर सेती सन्मुख हो।

किसी अनुभवी पुरूष के सन्मुख बैठे।

सत्गुर मिलिया दीखया लीनी। गत मित पाई अन्तर्गत चीन्ही॥

जिसकी आँखें चार हुई, क्योंकि Life से Life आयेगी Life Impulse (जीवन की लहर) Life (जीवन) से आयेगी। यह आत्म उभार है, जब तक आत्मा से भरपूर, आत्मसिद्धि वाला आदमी नहीं मिलेगा तो आत्मा को उभार नहीं मिलेगा। आलम (विद्वान) से तुम्हारी बुद्धि को उभार मिलेगा। बाहर इन्द्रियों के भोगों रसों में जो लोग लम्पट हो रहे हैं, उनकी सोहबत से इन्द्रियों को उभार मिलेगा। जो आत्म तत्व वेत्ता हैं, उनकी सोहबत से ही आत्मा को उभार मिलेगा। उनके मिलने से क्या होगा ? तुम अपनी आँखों से देखने वाले हो जाओगे। जब देखने वाले हो जाओगे तो —

जब देखा तौ गावा। तौ गावे का फल पावा॥

जो देखकर गाना है, वह नशे में जाना है। तो ऐसे गाना ही सही मायनों में फलदायक होता है। सुनी-सुनाई बातों पर, पढ़ी-पढ़ाई बातें सुनना-सुनाना यह कोई भाई भी कर

सकता है। देखकर बयान करना कुछ और है, उसकी जबान भी उस रस में Charge हो रही है, (भीगी हुई है) उसका नतीजा क्या है ? सुनकर दिल को थोड़ा टिकाव मिलता है।

जिस मिलिये मन रहसिये। सत्गुर तिसका नाओं।

जिसको मिलने से थोड़ी देर टिकाव मिले, उसका नाम सत्गुरू है। तो ऐसे पुरूष की संगत मांग रहे हैं। फिर कहा —

सन्त संग अन्तर प्रभ डीठा। नाम प्रभु का लागा मीठा॥

सन्त की सोहबत करो, अन्तर देखने वाले बन जाओगे। ''अन्तर प्रभ डीठा।'' यह नहीं कहा मरकर। उनकी सोहबत में हम अन्तर उस (प्रभु) के देखने वाले हो जायेंगे। प्रभु का जो नाम है, मीठा लगने लग जायगा। क्योंकि रस आने लग जाता है ना ! वह महा रस है —

नाम महारस पियो।

फिर साधु करके कहा।

प्रभ जी बसे साध की रसना।

साधु की रसना पर प्रभु बोलता है। क्या मिलता है उसमें ? कई बातें !

साध के संग मुख उज्जवल होत। साध संग मल सगली खोत॥

पूरी अष्टपदि साधु की तारीफ में हैं। उसकी सोहबत में हमें क्या कुछ होता है, क्या कुछ मिलता है। उसके मण्डल में Charging (प्रभाव) होती है।

सुभर भरे प्रेम रस रंग। उपजे चाव साध के संग॥

वह प्रभु के रस और रंग, नशे के, खुमार के Overflowing (लबालब भरे) प्याले होते हैं, उभर-उभर कर डुलने वाले प्याले। उनके देखने से —

उपजे चाव साध के संग।

उनके देखने से चाव पैदा होता है। पहलवान को देखकर पहलवानी का चाव उपजता है कि नहीं ? क्योंकि उनके देखने से प्रभु को पाने का चाव होता है। यह साधु की संगत का

नतीजा है। उधर क्या कहा — कि मनुष्य जन्म बड़े भाग्य से मिला है —

भई प्राप्त मानुख देह हुरिया। गोविन्द मिलन को एइ तेरी बिरिया।

कि भई मानुष जन्म तुम्हें बड़े भाग्य से मिला है, यह तुम्हारे प्रभु से मिलने का अवसर है —

It is thy turn to meet God. और किसी जन्म में नहीं। केवल मनुष्य योनि ही पाकर तुम उसको पा सकते हो।

अवर काज तेरे किते न काम।

जितने भई तुम काम कर रहे हो, यह तुम्हारी आत्मा को प्रभु में मिलाने में मददगार नहीं, यह फैलाव में ले जा रहे हैं। इनसे काम लेना है। कहते हैं, कौन से काम हैं जो तुम्हारे काम आने वाले हैं, आत्म-सिद्धि में, प्रभु को पाने में ?

मिल साध संगत भज केवल नाम।

साधु की संगत करो। वह क्या करेगा ? तुमको नाम के साथ जोड़ देगा।

जिन्नी नाम ध्याइया गये मुसक्कत घात। नानक ते मुख उझले केती छुट्टे नाल॥

जिन्होंने नाम को ध्याया है, उनकी मनुष्य जीवन पाने की मुशक्कत सफल हो गई, उनके अपने मुख मालक की दरगाह में उजले हो गये और उनके साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया।

गुरमुख कोटि उधारदा, दे नाँवें इक कनी।

नाम किस को कहते हैं ? दो किस्म के नाम हैं। परमात्मा अनाम है।

नमस्तं अनामं।

जब वह एक से अनेक हुआ, वह इज़हार में आया, 'एको अहं बहुश्याम'।

एको कवाओ तिस ते होय लख दरयाओ।

जब ताकत जो Absolute God थी, अनाम और अशब्द थी, वह इज़हार में आई, उस Power का नाम है नाम। इसलिये कहा —

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

तो God into Expression Power कहो, जो परमात्मा इज़हार में आई ताकत है, जो सब खण्डों ब्रह्मण्डों को आधार दे रही है, उसका नाम, नाम है। तो उस ताकत के अनेकों नाम, उसको समझाने बुझाने, उसका बोध कराने के लिए ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने रखे। किसी ने कहा, वह राम है, रम रहा है। किसी ने उसको वाहेगुरू कहा। किसी ने उसको कहा वह विश्वम्बर है, किसी ने स्वामी कहा, इसी तरह और अनेकों नाम हैं, सैकड़ों नाम। तो इन नामों पर भी हम कुरबान हैं —

बलिहार जाओं जेते तेरे नाओं हैं।

मगर कौन नाम है वह —

कौन नाम जग जाके सिमरे भवसागर को तरिये।

हर एक समाजों के भाई कहते हैं, कि हमारा ही नाम भवसागर से पार उतारने वाला है।

यह Claim (दावा) है, हर एक समाज का, फिर कौन सच्चा हुआ भई ? अक्षर ठीक हैं, नाम ही से उद्धार है। वह अक्षरी नाम जिसका बोध कराते हैं, नाम जिस नामी का बोध कराते हैं, उसके साथ लगो। उसी के अनेकों नाम रखे गये। जब तक नामों से चलकर उस नामी को हम नहीं पाते, जिसके यह नाम हैं, जिसके समझाने बुझाने के लिए यह नाम बरते गये हैं, जब तक शान्ति नहीं। यही कारण है, हम नाम भी जपते हैं, और भी बहुत से अपराविद्या के साधन करते हैं, मगर शान्ति नहीं। थोड़ी देर के लिए मन खड़ा होता है, फिर भाग उठता है।

इस्मखानी रा मुसम्मा रा बिजो।

तुम नाम ले रहे हो, जाओ जिसके यह नाम हैं, उसको पकड़ो। नामी को पकड़ो।

बे मुसम्मा इस्म कै बाशद निको।

बगैर नामी के खाली हैं यह अक्षरी नाम, जो उसको बोध कराने के लिए बरते गये हैं। उनका सुमिरन करने से तुमको शान्ति कैसे हो सकती है ? बर्फ को तुम Ice कहो, Snow कहो, कहने से तो ठण्डक नहीं। कहकर पियो। जिसके नाम हैं, उसके पास बैठो, ठण्डक

आयेगी। पानी है। उसको जल कहो, नीर कहो, आब कहो, वाटर कहो, एकवा कहो, हर एक जबान में उसके नाम हैं। पहले नाम लेना ठीक है। फिर जिसका यह बोध कराते हैं उसके साथ नहीं लगते, उसको नहीं पाते, प्यास नहीं बुझती। तो साधु तुमको क्या देता है ? वह नाम कहां है ?

नौ निधि अमृत प्रभ का नाम। देहि में उसका बिसराम॥

हर किसम की खुशियों का देने वाला जो प्रभु का नाम है, उसका बासा तुम्हारे अन्तर है। कहाँ पर है ?

अदृष्टि अगोचर नाम अपारा। अति रस मीठा नाम प्यारा।

वह बाहरी दृष्टि का मजमून नहीं, अदृष्ट है। अन्तमुर्ख होना पड़ेगा। बड़ा प्यारा नाम है वह। वह अगोचर है। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना पड़ेगा। बड़ा मीठा, बड़ा प्यारा, बड़ा नशे का देने वाला है। उसकी निशानी क्या है ?

नाम जपत कोटि सूर उजियारा।

ज्योति का विकास होता है। क्यों भई आप नाम जप रहे हैं, कोई न कोई हर एक समाज में, क्या प्रकाश हुआ अन्तर ? हुआ है तब तो समझो कुछ न कुछ विकास है उसका। अगर नहीं हुआ तो इसका मतलब है कि हम अक्षरी नामों को तो जब रहे हैं, जिसके यह नाम हैं उसके साथ नहीं लगे।

राम नाम कीर्तन।

उसमें कीर्तन हो रहा है। अखण्ड की ध्वनि हो रही है। प्रणव की ध्वनि कहो, उद्गीत कहो, अगर अन्तर में उसका ताल्लुक नहीं मिला तो समझो अभी नाम का ताल्लुक नहीं मिला। वह कहां है ?

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा।

इन्द्रियों के घाट से ऊपर मिलता है। कौन दे सकता है ?

साधु के संग वस्तु अगोचर मिले।

साधु की संगत में यह जो अगोचर वस्तु है, जिसमें ज्योति का विकास है, प्रणव की

ध्वनि हो रही है, अखण्ड की धारा बह रही है, यह उसके (साधु के) हाथ है।

गुरू काढ तली दिखलाया।

तो आप समझे सत्संग किसका नाम है ? तो महापुरूषों ने इसकी महिमा गई है। क्या ? साधु में और हममें क्या फर्क है ? वह हमारी तरह इन्सानी शकल रखता है। एक डॉक्टर में और एक आम (साधारण) आदमी में क्या फर्क है ? वह इन्सान है, पहले। उसने जिस्म की साइन्स की चीर फाड़ करके, Anatomy करके, यह वह करके देखा है जिस्म का सिस्टम कैसे काम करता है ? कैसे रूकावटें बनती हैं ? कैसे दूर हो सकती हैं ? वह इस में माहिर हो गया है। इन्सान है वह भी। जिस्म की साइन्स में वह माहिर है। जो इस साइन्स को पाना चाहेंगे उसके पास जायेंगे। वह कहेगा, मैं इन्सान हूं। इसी तरह आत्म-सिद्धी वाले पुरूष, आत्मतत्व दर्शी कहो, आत्मज्ञानी कहो, Self Knowledge और God Knowledge पाने वाले महात्मा कहो, वह भी कहते हैं, हम भई तुम्हारी तरह हैं।

मानस मूरत नानक नाम।

मैं इन्सान हूं। लोग किसको नानक कहते हैं। पर अपनी खबर साथ ही दी।

जैसे में आवे खसम की बाणी। तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो ॥

I am the mouthpiece of God. जैसे अन्तर से मालिक की धारा आती है, वैसा ही मैं बयान करता हूं। यह फर्क है। तो ऐसे पुरूषों की संगत जो सत् का स्वरूप हो गये, सत् का Mouthpiece बन गये, वह हमारी तरह इन्सान हैं, मगर इस Way में Develop किया है। मनुष्य जीवन ही में इन्सान यह काम कर सकता है। तो साधु की संगत —

मिल साधु संगत भज केवल नाम।

उस परिपूर्ण परमात्मा के ध्याने के लिए। नतीजा क्या है ? वह जाग उठता है। सारी दुनियां सो रही है। आलम भी सो रहे हैं, बे इल्म भी सो रहे हैं, अमीर और गरीब, सब सो रहे हैं। आप कहेंगे कैसे ? अपने आपकी होश नहीं। सब की आत्मा मन के अधीन है। मन आगे इन्द्रियों के अधीन है, इन्द्रियों को भोग खींच रहे हैं। हम बाहरी जिस्म और जगत का रूप बने बैठे हैं, अपने आपसे बेसुध और बेखबर हैं। यह हालत सबकी बनी पड़ी है। आलम लोग बुद्धि के फैलाव में और ज्यादा जा रहे हैं। बेइल्म आगे ही इन्द्रियों के घाट का

रूप बन बैठे हैं। उनको (आलिमों को) डबल बीमारी हो रही है। एक इन्द्रियों के घाट का रूप, एक बुद्धि का फैलाव। जितना फैलाव उतनी दूरी। तो अभी आप कहेंगे हम भी तो विचार कर रहे हैं। भई ठीक है। Reasoning is the Help मगर Help है किसी चीज के समझने के लिये। समझ क्या रहे हैं ? कि सबकी आत्मा चेतन स्वरूप है। मनुष्य जीवन पाकर हमारा सबसे बड़ा काम प्रभु को पाना है, आत्मा का परमात्मा से जुड़ना है। मगर हमारी गति क्या हो रही है ? वह परमात्मा कहां है ? वह हमारे घट-घट में है, वह हमारा जीवनाधार है, उसी के आधार पर हमारी आत्मा जिस्म के साथ है। जब वह आधार हटा लिया जाता है, जिस्म की प्रलय हो जाती है। उसके आधार पर खण्ड ब्रह्मण्ड चल रहे हैं। जब वह सत्ता हटा ली जाती है तो जगत की प्रलय, महाप्रलय हो जाती है। है हमारी आत्मा की आत्मा। इतना नजदीक है कि जितना कोई और चीज नजदीक नहीं। यह उपनिषद कह रहे हैं। हमारी आत्मा मन का रूप बन गई। मिलकर यह जीव बन गया। इसको खींच रहे हैं इन्द्रियों के भोग। बाहर जगत के फैलाव में जा रहा है। अपने आपसे बेसुध और बेखबर हो रहा है।

एका सेज बिछी धन कन्ता।

एक ही सेज पर आत्मा और परमात्मा दोनों विराजमान हैं।

धन सूती पिर सद जागन्ता।

आत्मा बाहर इन्द्रियों के घाट पर फैलाव के कारण उस पर सो रही है, वह पति देव (परमात्मा) जाग रहा है। इन्तज़ार कर रहा है, कब आँख खुलती है। सारे महापुरूष यही कहते हैं।

हमा आलम खुफता व तो हम खुफता। खुफता रा खुफता कै कुनद बेदार।

सारा जहान सो रहा है। अरे भई तू भी उसके साथ सो रहा है। आलम भी सो रहे हैं और बे इल्म भी सो रहे हैं। इन्द्रियों के घाट पर फैलाव के कारण, अपने आपसे बेखबर हैं। फिर ? सोये हुए को सोया हुआ कैसे जगा सकता है ? देखिये सत्संगत में एक जागते पुरूष की संगत है। एक आदमी जगता हो, उसके साथ हजार आदमी सो रहे हों, वह जगा सकता है कि नहीं ? अगर वह भी सोया पड़ा हो ? क्या ? इन्द्रियों के घाट के फैलाव में हो। लैकचरार हो, कथई हो, ज्ञानवान ही, जबानी जमाखर्च वाला Intellectual Wrestler हो,

क्या वह तुमको जगा देगा ? नहीं।

तो महात्मा जब भी आते हैं, वह कहते हैं, सारा जहान सो रहा है मन के घाट पर। सोया पड़ा है मन के घाट पर। सबसे जबरदस्त मन यह बाहर पिण्डी मन है, जो हमें पिण्ड में फैला रहा है। इसकी भी Stages हैं, पिण्ड, अण्ड और ब्रह्मण्ड, यानी पिण्डी मन, अण्डी मन और ब्रह्मण्डी मन। इसका जहाज तीन लोकों तक जाता है। मामूली चीज नहीं यह। बड़े-बड़े ऋषि, मुनी, महात्मा इसके हाथों रोते चले गये। पहला पिण्डी मन जिसको इसे काबू करना है, इसको बाहर इन्द्रियों के घाट से हटाना है। आपको पता है हाबील, काबील का जिकर, मुसलमानों की किताब में, बाइबल में भी आता है, कि पिण्डी मन हाबील ने काबील को मार दिया, अण्डी मन को बाहर से हटो। मन भी बड़ा अजीब है। मगर मन काबू आ जाये तो तीन लोक की बातें भासता है। मन कोई छोटी चीज थोड़ी है ? तो पहला पिण्ड में जो फंसा पड़ा है, इन्द्रियों के भोगों में, वह पिण्डी मन है। पहला। इससे ऊपर आओ। इसको हटाना है। बस। फैलाव से हटो तो अपने आपकी होश आये। फिर ! तो महात्मा, जागता पुरूष जब मिलता है, वह क्या कहता है ? अरे भई तुम सब सो रहे हो। जागो ! गुरबानी में आता है कि नहीं।

जागो जागो भाईयो चलेया वंजारा।

अरे भई जागो तुम भी। हमें कभी ख्याल आया ? जैसे सोये को आवाज दो। ''हां भई।'' मरते हुए देखते हैं, ऐसे ही जिस्म, कन्धों पर उठाकर, शमशान भूमि में पहुंचाकर अपने हाथों से दाग देते हैं। मगर यकीन नहीं आता है। जब पुकारो, ''हां भई।'' यह हालत बन रही है। तो महापुरूष कहते हैं भई जागो।

उठ जाग वटावड़िया तैं क्या चिर लाया।

गुरू अर्जन साहब फर्माते हैं, कि ए मुसाफिर ! उठ, जाग ! क्यों देर कर रहा है।

जाग प्यारी अब काहे सोवै। रैन गई अब काहे खोवै।

कि ए प्यारी रूह जाग। अब क्यों तू सो रही है। मनुष्य जीवन का दिन चढ़ आया है। यह तेरे जागने का वक्त है। अब भी तू इन्द्रियों के रसों-भोगों में सोई रही है तो कब जागेगी ?

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे। एहला जन्म गवांया।

Awake Arise and stop not until the goal is reached.

जागो ! उठ खड़े हो, और उस वक्त तक न ठहरो जब तक मन्जिले मकसूद को न पाओ। तो इस सोई हुई हालत से जाग कैसे सकते हैं ? हम सो कैसे रहे हैं। यह है बीमारी । Cause (कारण) की तरफ जाओगे ना, समझ आयेगी - फिर निकलने का भी कोई सामान होगा। अब जो जाग उठा है, वह तो जानता है कैसे दुनियां सो रही है और कैसे यह उठ सकते हैं। जो खुद सो रहे हैं ?

उनको (जागते पुरूषों को) पूछेंगे, इस बात को बड़ा खोल खोलकर बयान किया है। किसी महापुरूष की बाणी ले लो। इस वक्त मेरे सामने कई महापुरूषों की बाणी आ रही है। सबकी बाणी पेश करनी तो मुश्किल है, मगर ताहम थोड़ा-थोड़ा आपके सामने रखा जाएगा। गौर से सुनियो कि हम कैसे सो रहे हैं ? कैसे जाग सकते हैं ? पहले एक शब्द श्री गुरू अर्जन साहब का रखा जाएगा, फिर स्वामी जी महाराज के कुछ Quotations (हवाले) दे दिये जायेंगे, और और महापुरूषों के। बात यही है कि हम सो रहे हैं। तो आप कहेंगे, फिर हम कैसे बातें कर रहे हैं ? रात को सोते हुये बरड़ा कर बातें करते हैं कि नहीं ? वैसे ही समझ लो अब। होश तो नहीं ना। हम आत्मा हैं, देह धारी। मगर देह का रूप बन रहे हैं। बातों से कहते हैं, मेरा तन, मैं आत्मा ! मगर जैसे मैंने अपना कोट उतारकर रख दिया है यहां, ऐसे उतारकर रख सकते हैं इस जिस्म को ? इससे ऊपर आ सकते हो ? इससे Rise above करो, Analyse करो अपने आपको, आत्मा को, जिस्म से अलेहदा करके देखो, तब अपने आपका अनुभव होगा। अब आपके सामने जो मजमून आ रहा है, गौर से सुनिए कि हम कैसे सो गये, कैसे जाग सकते हैं ! हम लोगों ने कौन कौन से उपाय किये हैं ? वह उपाय करते हुए भी हम जागने में क्यों कामयाब नहीं हुए ? इन बातों का जिकर होगा। बड़े ठण्डे दिल से विचारिए।

नैनों नींद पर दृष्टि विकार। श्रवन सोये सुन निन्द विचार॥

फरमाते हैं — अब देखिये, सन्तों का उपदेश आत्मा देहधारियों को है, जो मन-इन्द्रियों के घाट पर फंसे पड़े हैं बुरी तरह, निकल नहीं सकते। समाजों, कौमों, मजहबों, मिल्लतों, उनसे कोई मतलब नहीं। न सामाजिक है उनकी तालीम न पोलीटिकल। अरे

भई आत्मा देहधारियों को, सुरति को, आत्मा को उनका उपदेश है। क्या कहते हैं ? कहते हैं जबसे आप पैदा हुये हो, देखने की आदत हुई। बाहर देखकर बाहर देखने वाली आंख तो खुल गई। अन्दर जो देखने वाली आंख थी वह बन्द हो गई। अन्तर से सो गये। ''नैनों नींद पर दृष्टि विकार।'' पर दृष्टि के विकारों से अन्तर की आंख सो गई। बाहर तो जाग रहे हैं, पर धन, पर तन, पर दारा। फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा है। फलाने की जायदाद है, यह रूपया है, वह पैसा है, यह जायदाद है। बस। पर दृष्टि के विकारों से बाहर संस्कार लेकर, आंखों के रस्ते याद रखो, 83 फीसदी संस्कार अन्तर में आते हैं। 83 फीसदी देख देखकर। जो कुछ देखता है, वही संस्कार अन्तर में बैठ रहा है। नतीजा क्या है ? आंख बन्द होती है। वही दृश्य जो देखता है सामने आते हैं। ख्वाब में चले गये। वहां भी वह Reproduce होते हैं। एक किसम की Superficial Life बन गई। अपने आपकी तरफ Dip करना नसीब नहीं हुआ। तो कहते हैं, इस तरह पर दृष्टि के विकारों से अन्तर की आंख बन्द हो गई।

नैनों नींद पर दृष्टि विकार। श्रवन सोये सुन निन्द विचार॥

कान बाहर की बातें सुन सुनकर, लोगों के विचार सुन सुनकर — निन्दा किसको कहते हैं ? किसी चीज को कम या बेश (ज्यादा) बयान करना, 16 आने के 16 आने कहना ठीक, 16 आने को 32 आने या 2 आने बयान करना, यह निन्दा है। Exagerate करना या Underrate करना। तो पर निन्दा के विचारों को सुन सुनकर। लोगों की बातों को चुपचाप सुनते रहिये। लोग क्या कहते हैं ? फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा है। फलाना अच्छा है, फलाना बुरा है। फलाने ने मेरे साथ ऐसा कर दिया, मेरा खून निचोड़ लिया। फलाना ऐसा है, मेरा रूपया मार लिया, मेरा यह कर दिया, मैंने उसके साथ यह किया था, उसने मेरे साथ यह किया। ज्यादातर बातें यही आयेंगी ना ! तो 14 फीसदी संस्कार केवल कानों के रस्ते से अन्तर आते हैं। 83 और 14 अर्थात् 97 फीसदी संस्कार आते हैं, इन दोनों इन्द्रियों के घाट पर। हम आँख बन्द करते हैं, जो दृश्य देखे हैं, अन्तर आते हैं। जो सुनी हुई बातें हैं, अन्तर में Reproduce होती हैं। यह हालत है। बाहर का दृश्य बाहर का रूप। Superficial Life बन गई ना ! अपने आपकी तरफ नजर नहीं गई, सोते भी और जागते भी। अपने आपकी तरफ से बिल्कुल, जैसे ख्वाबे खरगोश

होती है नहीं, घुक (घोर) नींद सोये पड़े हैं। यह पहला कारण है।

रसना सोई लोभ बहु स्वाद। मन सोया माया विस्माद॥

सो फरमाते हैं कि रसना, जैसे-जैसे लज्जतें लीं, वह देखा, फलानी चीज बड़ी मीठी है, फलाना बड़ा अच्छा दृश्य मिला, फलाना यह हुआ, तो तीन इन्द्रे, पाँच में से, बड़े प्रबल हैं इन्सान के। जो देखा, जो सुना, जो खाया, जो पिया। आज जो लज्जत आई कल उससे और ज्यादा लेना चाहता है, दिनों दिन बढ़ता जाता है।

मैं अमरीका में गया। वहां एक Divine Father के यहां मैं गया तो उन्होंने अपनी तरफ से बड़ी आवभगत की Breakfast (नाशता) देने के लिए, वहां पर साठ Dishes (रकावियाँ) Serve हुई (बरताई गई) बाकी जाने Creams (मलाइयाँ) और यह वह, वह अलेहदा बात है। Sixty (साठ), अन्दाजा लगाइये, चखने की भी कोई हद है। तो जो खाया, जो देखा, जो सुना, वही Reproduce अन्तर में हो रहा है। एक Superficial जीवन बन गया।

मन सोया माया बिस्माद।

मास कहते हैं भूल को।

इह शरीर मूल है माया।

माया, भूल का मूल शरीर से शुरू होता है। मैं आत्मा देहधारी हूं, जिस्म का रूप बन गया मैं। इन इन्द्रियों के Level से दुनियां को देखने लग गया। Superficial जीवन बन गया कि नहीं ?

इह शरीर मूल है माया।

तो मन, माया में सो रहा है। अन्दर से सो गया कि नहीं ? बाहर का रूप बन गया, जागते भी और सोते भी। यह हालत दुनियां की बन रही है। क्या अच्छा फोटो खींचा है ! सब महापुरूषों ने इन तरफ तवज्जो दिलाई है। बाकी जो दो इन्द्रे रह जाते हैं उनसे भी बाहर के संस्कार अन्तर आते हैं मगर ज्यादातर इन तीनों से आते हैं। इसीलिए एक फकीर ने कहा —

चश्म बन्दो गोश बन्दो लब बे बन्द। गर न बीनी सिर्रे हक बर मन बिखन्द॥

तुम आँखों को बन्द कर लो, कानों को बन्द कर लो, होठों को। होंठ बन्द हो गए, जबान कहां चली ? खाना नहीं होगा ना ! कहते हैं तीन चीजों से संस्कार जो बाहर से अन्तर को आते हैं, अगर अन्तर्मुख हो जाओ, बाहर के रस लेने बन्द कर दो, अगर हकीकत तुम पर न खुले तो मुझ पर हँसी करना, ''बरमन बिखन्द '' हँसी करना।

कितनी Definite बात कही ? इसका मतलब क्या है ? बाहर से हटने का सवाल है। इस वक्त हम बाहर फैलाव में रहे हैं। इसलिये कुदरती बात क्या है, अन्तर से सो रहे हैं। यह है बीमारी। किस तरह से हम अन्तर से सो गए ? कितनी खूबसूरती से Analyse किया है मजमून। तो कहते हैं कि सारी दुनियां सो रही है। अब जागता पुरूष, जो इससे हटा है, वही तुम्हारी इन्द्रियों को उलटे, बाहर से हटाये, तो अन्तर्मुख हो ना ! अब बाहर देख रहे हो, फिर वह तुमको अन्तर देखना बख्शे, जरा रस्ता खोल दे। अब बाहर सुन रहे हो, अन्तर उस, अधर की वाणी को सुनने लग जाओ, बाहर के रस ले रहे हो, अन्तर वह महारस आने लग जाए। तो अन्तर का रस पाने पर —

जब ओह रस आवा। इह रस नहीं भावा।

तब बाहर से हटोगे, अन्तर से जाग सकोगे। बात तो, बड़ी मोटी बात है यह। कहते हैं, यह कारण है कि सब दुनियां सो रही है। सब आत्मा देहधारी सो रहे हैं। अब जागता पुरूष जो है, जो इससे ऊपर आया है, वह क्या कहता है ? इन इन्द्रियों को उलटने का मार्ग देता है। तुमको अन्तर जगाता है, बाहर से हटाता है।

सत्गुर मिलिए उलटी भई भाई। जीवत मरे तां बूझ पाये॥

वह तुमको, इन्द्रियों को कैसे Invert (उलट) कर सकते हैं ? कैसे इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ सकते हैं ? यह तालीम देता है, जीते जी मरने की। तब तुम हकीकत को देखने वाले हो जाते हो। जो इस से जाग उठा, वह तुमको जगा सकता है। जागता हुआ ही सोये हुओं को जगायेगा ना ! तो ऐसे पुरूषों की संगत का नाम सत् का संग, सत्संग है।

इस गृह में कोई जागत रहे। साबत वस्तु अपनी लहे॥

कहते हैं, यह जिस्म रूपी मकान में तुम रह रहे हो, अगर तुम जाग उठो, वह प्रभु, वह पूंजी, जो तुम्हारी है, उसको पा जाओ। जागने का सवाल रहा। अब सो रहे हैं।

एका संगत इकत गृह बसते। मिल बात न करते भाई।

एक ही संगत में आत्मा परमात्मा दोनों विराजमान हैं, इसी घर के अन्दर। मगर एक दूसरे से बात नहीं करते। परमात्मा कहां मिलता है ? अरे भई तुम्हारे अन्तर है। बाहर से हटो।

साईं दा की पावना। इधरों पटना ते ओधर लावना॥

बस —

कुल कुटुम्ब सकल ते तोड़े। तौ हमरे बेडी आवे हो॥

बड़ी साफगोई है। तो दुनियां सो रही है। कहते हैं इस घर में कोई जाग उठे तो अपनी वस्तु को इसी घर में पूरी वस्तु को संभाल ले। पूंजी जो थी, पूरी पूंजी को पा जाये। हकीकत को, पूर्ण को पाकर पूर्ण हो जाओगे कि नहीं ? परमात्मा पूर्ण है। उसको पाकर तुम भी पूर्ण हो जाओगे। वह कहां है ? आपके अंतर में है। फैलाव से हटो। बड़ी मोटी बात तो यही है। तो बड़े प्यार से यही कह रहे हैं।

सवाल यह आता है कि हमें जगाये कौन ? सो तो सब रहे हैं, इन्द्रियों के घाट पर। मन का रूप बने बैठे हैं। आलम, पढ़े-लिखे, अनपढ़, अमीर, गरीब, माफ करना लेक्चर देने वाले ग्रन्थाकार भी, सब बाहिरमुखी बैठे हैं। अब इस सोई हुई हालत से कौन जगायेगा ? बस। आगे जवाब देंगे। गौर से सुनिये।

सकल सहेली अपने रस माती। गृह अपने की खबर न जाती॥

यह सब सहेलियाँ हैं। जितने आत्मा देहधारी हैं, सब सहेलियाँ हैं। सभी अपने-अपने रसों में मस्त हो रही हैं, इन्द्रियों के रसों भोगों में, अपने आप की सुधि नहीं। आलिम हो, फाजिल हो, ग्रन्थाकार हो, चातुर हो, कोई भी, जो सो रहा है, अपने आपको, कोई आँखों की इन्द्री किसी को खींच रही है, किसी को कानों की, किसी को जबान की, किसी को स्पर्श की। सब किसी न किसी बीमारी में गिरफ्तार हैं। एक-एक इन्द्री का गुलाम, याद

रखो, या तो मौत के घाट उतारता है, या सारी उमर की गुलामी सिर लेता है। मिसाल के तौर पर देखो, परवाना है, जल मरता है। उसकी आँख की इन्द्री प्रबल है। मछली है, उसकी जबान की इन्द्री प्रबल है। माछी लोग कुन्डी पर आटा लगाकर दरिया में डाल देते हैं। भंवरे को नाक की इन्द्री बड़ी प्रबल है। वह फूलों में घुटकर मर जाता है। तीन इन्द्रियों के गुलाम मौत के घाट उतर गये। बाकी रही दो इन्द्रियां। कान का इन्द्री हिरन को बड़ी प्रबल है, साँप को बड़ी प्रबल है। सारी उमर की गुलामी सिर लेता है। हिरन को कैसे पकड़ते हैं जंगलों में ? ढोल बजाते हैं। आवाज पर मस्त होकर सिर रख देता है। सारी उमर की गुलामी सिर लेता है। साँप कितना है - बतनाक (भयानक) जानवर है। बीन बजाओ, सिर रख देता है। सारी उमर पिटारी में गुजरती है। बाकी रही स्पर्श की इन्द्री। वह हाथी को बड़ी प्रबल है। उसको कैसे पकड़ते हैं जंगलों में ? बड़े-बड़े गहरे गढ़े, खन्दकें, खोद लेते हैं। उनको टहनियों, पत्तों वगैरह से ढंक लेते हैं, ताकि पता न लगे। ऊपर हथनी की शकल बना देते हैं। स्पर्श के वेग में आया छलाँग मारता है। गढ़े में गिर जाता है। कई दिन भूखा रखते हैं। सारी उमर अंकस के नीचे रहता है। भई एक इन्द्री के गुलाम का यह हशर (परिणाम) है, जिसको पाँचों इन्द्रियां प्रबल हों ?

एते रस शरीर के, कै घट नाम निवास।

देखो, ठण्डे दिल से विचार करो। कहते हैं, जिधर देखो सब ही मस्त हो रहे हैं इन्द्रियों के घाट पर। भाई भी, बहिन भी, स्त्री भी, पति भी। समझे। लड़का, माता, पिता, सब। फिर अब इस सोई हुई हालत से कौन जगाये ? एक सोया हो, एक नशे में सोया हो, सोये को भी जल्दी जगा सकते हो, माफ करना। और नशा पीकर सो गया हो ? आवाज दो एं एं करता है। होश नहीं। कौन जगाये ? बात यह है। यह सही नक्शा है, जीवों का। कौन देखता है ? जो जागता पुरूष है। यह अफसाना (कहानी) नहीं, वाकेयात (सच्ची घटना) है। Fact हैं। Hard Facts. कहते हैं जिधर नजर मारकर देखो, सारे अपने अपने रसों में मस्त हैं। अपने घर की सुध-बुध नहीं। फिर ? अब इसके लोग उपाय करते हैं। कई किस्म के उपाय हैं। आगे खोलकर और बयान करेंगे। वह बाणियां हम पढ़ छोड़ते हैं। कितनी पुरमगज (गूढ़) हैं ? पर पाठ करने पर खत्म नहीं। समझो, उसमें क्या है। बड़ी भारी राज (भेद) की बातें बतलाई हैं।

मूसनहौर पाँच बटमारे। सूने नगर पड़े ठग हारे॥

कहते हैं इस मकान में आदमी सो रहा है। डाकू लूट रहे हैं। कौन ? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। यह लूटे जा रहे हैं बेअखत्यार। जिस मकान में मालिक सो रहा हो घूक (गहरी नींद में) नशा पीकर, जो मर्जी हो लूटकर ले जाये। हम लूटे जा रहे हैं और हमें पता भी नहीं। पता पीछे लगता है, जब लूटे जाते हैं। उस वक्त वेग इतना होता है, सब पढ़ा-लिखा भूल जाता है। ज्ञान-ध्यान किनारे रह जाता है। यह पाँच डाकू लूट रहे हैं और यह घर सूना पड़ा है। मालिक मकान सो रहा है। तुम इस शरीर रूपी मकान के रहने वाले हो ना ! सो रहे हैं घूक, नशे में जा रहे हैं। सौ बार जगाते हैं। हाँ हाँ करके भी अन्तर से हाँ नहीं होती। ऊपर से, Superficial है। ऊपर से हाँ हाँ भी करेंगे, मगर जब At Home बात न हो (दिल मैं न बैठे) सो यह हालत बनी पड़ी है।

उन ते राखे बाप न माई। उन ते राखे मीत न भाई॥

पहली बात। इस हालत से बताओ कौन छुड़ा सकता है ? न माता न पिता न भाई न दोस्त। यही होते हैं ना बड़े हमदर्द (हितैषी) दुनियां में ? माता-पिता या भाई या दोस्त ! वह खुद लूटे जा रहे हैं। तुमको कैसे मदद कर सकते हैं ? आलम हैं या फाजिल हैं, पढ़े हैं या अनपढ़ हैं, कोई सवाल नहीं। यह डाकू बेइखत्यार लूट रहे हैं सबको। जो खुद लुटे जा रहे हैं, तुमको क्या बचायेंगे ? फिर क्या कहते हैं —

दरब स्यानप होये न रहते।

रूपये पैसे से भी यह काबू नहीं आते। अकलमन्दी से भी यह बाज नहीं आते। अकलमन्द, माफ करना, गिर जाते हैं कि नहीं ? तो Intellectual Wrestling से, बुद्धि विचारों से, न रूपये पैसे, लालच देने से यह काबू आते हैं। अब देखिये, अकलमन्द आदमी आपको क्या कहते हैं ? स्वामीजी महाराज ने इसको और वाजेह (स्पष्ट) किया है मजमून को। हमने समझना है, दो चार मिनट के लिये इसी मजमून को कि क्या उन्होंने फरमाया। बाकी फिर इस मजमून को लेंगे।

सोता मन कस जागे भाई। सो उपाय मैं करूं बखान॥

यह तो अब पता लग गया कि हम सो रहे हैं। मन हमारा सो रहा है अन्तर। कहते हैं यह कैसे जाग सकता है ? हम क्या क्या उपाय कर रहे हैं ? उसका जिकर करेंगे। फिर

उसका क्या कहीं उपाय है ? सो गुरू अर्जन साहब फरमाते हैं वही यह फरमायेंगे। सौ सियाने एक ही मत। जो जाग उठा है वह देख सकता है कैसे बच सकते हैं ? तो कहते हैं वह उपाय तुमको बतलाता हूं, कि यह जो मन सो रहा है यह कैसे जाग सकता है ? और हम — पहले बतायेंगे कौन-कौन से हम साधन कर रहे हैं ? क्यों हम उससे नहीं जागे अभी तक। इसका Reason (कारण) देंगे।

तीरथ करे ब्रत भी राखे। विद्या पढ़ के हुए सुजान॥

लोगों ने पहले तज़बीज दी कि भई तीर्थों पर जाना चाहिए। तीर्थों पर जाने की गरज क्या थी ? तीर्थ कैसे बने ? वहां पर कोई न कोई जागता पुरूष रहा, जो जाग उठा। जहां वह रहा वह तीर्थ स्थान बन गया है। कबीर साहब कहते हैं कि हे राम, हमारे दिल में एक वसवसा (शंका) बन गया है।

झगड़ा एक नबेड़ो राम

बहुत सारा बयान करके आखिर कहते हैं।

तीरथ बड़ो कि हरि का दास

जो हरि का दास है वह बड़ा है कि तीरथ ? कहना पड़ेगा कि हरि का दास। उसके सबब के तीरथ बने। एक हरि का दास, जागता पुरूष, दस जगह बैठा, दस तीरथ बन गये। गुरू नानक थे। जहां पैदा हुये, तलवन्डी, वह नन्काना साहब बन गया। रीठे के नीचे बैठे, रीठा साहब बन गया। एक जागता पुरूष जहां बैठा वह तीर्थ स्थान बन गया। और जितने तीर्थ हैं, उनकी वजह तस्मीया (बनने का कारण) यही है। वहां अनुभवी पुरूष, जागता पुरूष रहा। और भी लाखों करोड़ों वहां पैदा हुये, मर गये। कौन जानता है ? हजरत मोहम्मद साहब मक्का मदीना में पैदा हुये। वहां और भी लाखों आदमी पैदा हुये। योरूशलम में क्राईस्ट रहा। और लाखों पैदा हुये वहां। जहां कोई जागता पुरूष, हरि का दास रहा, वह तीर्थ है। अब तीर्थों पर जाने की गरज यह थी कि वहां जाकर किसी अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठो, जिसके कारण वह जगह आबाद है। उसकी तालीम को समझो क्या है ? घरबार के झंझटों से आजाद होकर थोड़ा वक्त महापुरूषों के चरणों में जाकर बैठो। वह जागते हैं, तुमको जागने का रस्ता देंगे। खाली जाकर नहाकर चले आये घर में ! आजकल तीर्थों का क्या हाल बना रखा है हमने ? तीर्थों का कसूर नहीं। यहां

सैरगाहें बन गईं। में हरिद्वार गया। वहां जाते हुऐ मैंने Talk दी रस्ते में कि अफसोस से कहना पड़ता है, यह वह जगह थी, कि जहां बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, महात्मा रहे। गुरू नानक साहब आए। गुरू अमरदास साहब हर साल आते रहे। वहां उतरो स्टेशन पर, रस्ते में दो सिनेमा आते हैं। तो कहने लगे महाराज ! अब तीन हो गये। इसका मतलब है एक और बढ़ गया। शाम को खाने-पीने के सिवा इनको और कुछ सूझता नहीं। अरे भई तीरथ का तमलब यह नहीं। बाहर गये, तीर्थ स्थान नहा आये।

इक भा लत्थी नहातेयाँ। दो भा बढ़ गई और ॥

और —

मन मैले सब किछ मैला। तन धोते मन हच्छा न होय ॥
इह जगत भरम भुलाया । विरला बूझे कोय ॥

कैसे सफाई होनी थी ?

मन मेरे तू जप एको नाम। सत्गुर मो को दियो एह निधान ॥

नाम से पवित्र होता है। अब नाम का रसिया कोई मिले। नाम है अदृष्ट और अगोचर। उसके साथ जुड़े तब पवित्रता आये ना ! कबीर साहब ने यहां तक कहा —

दिल दरिया की माछरी गंगा बहि आई। अनक जतन से धोवई तोहू वास न जाई ॥

गंगाजल में मछलियाँ रहती हैं कि नहीं ? क्या उनकी बू चली जाती है ? तो तन के धोने से मन की मैल नहीं जाती। मन की मैल कैसे जाती है ? जप जी साहब में इसका निर्णय किया है ?

भरिये हत्थ पैर तन देह। पानी धोते उतरस खेह ॥
मूत पलीती कप्पड़ हो। दे साबन ओह लईये धो ॥

मिट्टी से भर जाय तो पानी से साफ, गन्दगी से भर जाय तो साबुन से साफ कर लो —

भरिये मति पापां के संग।

जो मति पापों से भर जाये ?

ओह धोपे नावें के रंग।

अब आप समझे ? खाली तीर्थों पर हाथ लगाने से किसी की मुक्ति हुई न होगी, जब तक, जिस गरज को पाने के लिये तीर्थों पर गये थे, वह गरज पूरी न होगी। कहते हैं, बड़े तीर्थ हैं शमाल (उत्तर) से जनूब (दक्षिण) तक। हमारे हजूर फर्माया करते थे शमाल (उत्तर) के भागे फिरते हैं, मशरिक (पूर्व) के मगरिब (पश्चिम) को मगरिब के मशरिक को। जुलाहे की नली की तरह मारे-मारे फिरते हैं। चीज मिलती नहीं। मुझे एक साधु मिले। कहने लगे भई 14 बार अमरनाथ से लेकर रामेश्वर तक पैदल यात्रा की। फिर ! महाराज मन का क्या हाल है ? कहने लगा मन तो वैसे ही है। कसूर तो मन का था। तो खाली तीर्थों पर ही भ्रमण करने से जागता नहीं, और फैलाव में जाता है। फलानी जगह देखी, फलानी देखी, फलानी देखी। और हजारों संस्कार। एक जगह रहने से तो शायद सौ खण्ड संस्कार बैठेंगे। सैकड़ों शहरों में बैठने से सैकड़ों और हजारों ज्यादा बढ़ेंगे कि नहीं ? कहते हैं, बड़े लोगों ने तीर्थों पर जतन किये और कर करके हार गये।

तीरथ करे बरत भी राखे। विद्या पढ़े होये सुजान॥

तीर्थ किए, दूसरे व्रत भी रखे। व्रत आदि रखने का मतलब यह है कि यह शरीर है, इसको कम खाना दो। एक दिन छुट्टी दो। हर एक को हर रोज छुट्टी हो जाती है, किसी को हफ्ते में, किसी को पन्द्रह दिन, किसी को महीने के बाद। अरे भई इसको (पेट को) कभी छुट्टी दी है ? लादे चले जाते हो, माफ करना, एक वक्त लादो, दो वक्त लादो, तब तो ठीक ! हर पाँच मिनट, दस मिनट, कोई घण्टे दो घण्टे बाद, और कुछ डालो इसमें। मतलब यह है कि जो चीज पूरी हजम नहीं होती, आखिर बीमारियाँ पैदा करती है। रोग सोग पैदा करती है। व्रत रखे किस लिए ? गरज़ तो यह थी मगर यह नहीं किया। खाली व्रत रख लिया। आज भई बगैर पानी के व्रत है। अच्छा भई। सुबह चार-पाँच बजे खूब खिचड़ी खा लो, खूब घी खा लो। दिन को हाय हाय करके इन्द्रियों के घाट पर रहा। कभी भूख है, कभी प्यास है। व्रत रखने की गरज तो पूरी न हुई ना ! गरज तो यह थी कि इन्सान जिस्म से अतीत होकर अपनी सुरति को इन्द्रियों के घाट से हटाये, जितना पेट खाली रहे, उतना परमात्मा के नूर से भर जाये। रात को फिर हड़बू हड़बू करके फिर खाने लगे। किसी को हैजा हो जाता है, किसी को कुछ हो जाता है। या आ गये व्रत, कभी सब्जी खाने को आ गये, कभी फल ही खा लिए। गरज तो पूरी न हुई ना ! खाना इंसान के लिए

है। संयम से खाओ। थोड़ा खाओ। तो काम बन जायेगा। गज़ा जो हजम हो जायगी वह ताकत देगी ना ! व्रत रखने का तो मतलब यही है कि चेतन्य रहो ताकि गज़ा हजम हो जाए। तो जितनी नींद आती है, जितना आलम आता है, जितना मन दौड़ता है, उसका कारण यही है, हम खाते हैं, बेअख्तयार खाते हैं। जितना आलस आता है, जितना मन दौड़ता है, उसका कारण यही है, हम खाते हैं, बेअख्तयार खाते हैं। हम यह समझते हैं, हम खाने ही के लिए पैदा हुए हैं। असल बात यह है कि खाना हमारे लिए पैदा हुआ है।

पुराणों में एक गाथा आती है, कि अनाज ने जाकर शिकायत की विष्णु भगवान से, कि महाराज लोग मुझे बड़ा खाते हैं, मैं क्या करूं ? कहने लगे जो तुमको जरूरत से ज्यादा खाते हैं तुम उनको खा जाओ। वही खा रहा है। सब बीमार पड़े हैं। ज्यादातर बीमारी का कारण बदएतदाली (संयम का न होना) है, और क्या है ? संयम में, वक्त पर खाओ। भूख से दो लुकमे कम खाओ। चैतन्य रहोगे। सेहत अच्छी रहेगी। हर एक काम करने के तुम काबिल होगे। बहिरमुखी साधन, व्रतों के व्रत भी रख लिए। क्या हुआ ?

भुख्खेयां भुख न उतरे। जे बन्नां पूरियां भा ॥

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि व्रत भी रख रख के दुनियां हार गई, मन इन्द्रियों के घाट से जागे नहीं। जितना रहे इन्द्रियों के घाट पर ही रहे ना ! यह करके अगर Higher Purpose ले लेते, किसी साधु के संग में जाकर, इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाने का रास्ता मिल जाता, नाम का Contact (परिचय) मिल जाता, तब तो व्रत रखने का भी फायदा है, तीर्थ जाने का भी फायदा है। मगर एक बात पूरी हुई, दूसरी नहीं पूरी हुई, इसलिये यह कर करके भी हार गए। कईयों ने समझा भई विद्या पढ़ो। सुजान बन गए। आलम फाजल, खूब ग्रन्थाकार ! तो तुलसी साहब क्या फरमाते हैं ?

चार अठारह नौ पढ़े। खट पढ़ खोया मूल ॥
सुरति शब्द चीन्हे बिना। ज्यों पंछी चण्डूल ॥

चार वेद, अठारह पुराण, छः शास्त्र, यह तो हिन्दू मत की हैं, और सब मतों की धर्म पुस्तकें भी ले लो, सबको नोके जबान कर लो (रट लो) हिफज हाफज (पुस्तकों की जबानी याद करने वाले) बन जाए। कहते हैं उसकी क्या कीमत है, ऐसे आलम की ? कहते हैं जैसे चन्डूल पंछी होता है, वह जैसे बोली सुनता है, सुना देता है, ऐसे ही उसकी

कीमत है। जब तक सुरति इन्द्रियों का घाट छोड़ नाम के साथ लगती नहीं तब तक उसका कल्याण नहीं। तो पढ़ने से खाली, मुक्ति नहीं। मेरी बात समझे ना ! यही गुरू नानक साहिब ने फरमाया।

पढ़िए जेते बरस बरस पढ़िए जेते मास। पढ़िए जेती आरजा पढ़िए जेते स्वास।
नानक लेखा इक गल्ल। होर हौमे जख्खन झास॥

तो बुद्धि जब तक फैलाव से हटे नहीं — ''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है'' (उपनिषद)। पढ़ने से खाली, कल्याण नहीं। हम अब विचार कर रहे हैं। Reasoning is the help वेद भगवान क्या कहता है ?

''जो अविद्या में हैं, वह मरकर अंधकार लोकों में जायेंगे। जो विद्या में रत हैं, वह उनसे भी ज्यादा अंधकार लोकों में जायेंगे।''

बुद्धि को स्थिर करना था, असली बात तो यह है। न आलम (विद्वान) होने से यह है कि आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ सकते हैं — इल्म भी तो आखिर इन्द्रियों के घाट से आता है। व्रत रखना, तीर्थों पर भ्रमण करना, बहिरमुखी साधन जितने भी करते हो, इन सबका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। इन्द्रियों के घाट पर तो मन आगे ही सो रहा है अन्तर से। तो बाहर से जितने साधन किए वह असमर्थ रहे आपको जगाने में। बड़ा खोलकर बयान कर रहे हैं।

जप तप संजम बहु विधि धारे। मौनी हुये निदान।

बाहर के जप करने लगे। जप, जबान से करते रहे हैं ना ! मन कहीं और दौड़ रहा है। मन तो लम्पट हो रहा है। जबान से कर रहे हैं। फिर ? इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं गये। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ, जिस्म बेहिस हो जाये। कहते हैं, तो भी जागने की अवस्था न मिली। तप किया। उसका ताल्लुक भी इन्द्रियों के घाट से है।

जप तप संजम बहु विधि धारे, मौनी हुये निदान।

जबान बन्द करके — छ: महीने नहीं बोलना भई, दस बरस नहीं बोलना। भई जबान नहीं बोल रहा है। लिखकर कहता है, इशारे करता है, ऐसा लाओ ऐसा करो। तो सोई हुई हालत से जागे कैसे ? देखो, ठण्डे दिल से बिचारो। असल मतलब क्या था ? मौनी वह है

जिसका मन मौन हो जाये —

मन तो मूण्डा नहीं, सीस मुण्डाये कहाये।

तो मन को मौन करना है। बाहर का मौन धारण करते रहे। तो मैं यह अर्ज कर रहा था, गौर से सुनिये, कि ऐसे ऐसे कई उपाय दुनियां कर रही है। कोई पढ़ने में लग रही है, कोई लाखों का जाप कर रही है। कर करके फिर भी इन्द्रियों के घाट पर रहे। देखिए, जितने साधन अपराविद्या के हैं — दो किसम की विद्यायें हैं, एक अपराविद्या, एक पराविद्या। अपराविद्या में पढ़ना पढ़ाना, पूजा पाठ, रस्म रिवाज। तीर्थ यात्रा, हवन दान यह सब अपराविद्या में शामिल हैं। इन सबका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। हमारी आत्मा मन के आधीन होकर आगे ही इन्द्रियों के घाट पर बैठी है। अन्तर से सो रही है। जितने साधन भी करो, फिर भी इन्द्रियों के घाट पर रहे। जागे तो नहीं ? तो स्वामी जी महाराज फरमाते हैं, ऐसे अनेकों उपाय दुनियां कर रही है, जाग नहीं सके तो यह करते करते आखिर इन्सान तलाश करके जागना ही चाहता है तो कुछ न कुछ करता ही रहता है। आगे फरमायेंगे।

अस उपाओ हम बहुतक कीन्हे। तो भी यह मन जगा न आन॥

कि ऐसे अनेकों उपाय हम लोगों ने किये, पर हम जाग नहीं सके। इन्द्रियों का घाट छूटा नहीं। आपको पता है, हजूर के यहां एक पंडित जी आए। बड़े आलम फाजल (विद्वान) थे। शौक तो सुनकर आ ही जाता है। उपदेश ले लिया। जाते हुए — मैं पास ही खड़ा था — हजूर से कहने लगे कि महाराज आपने जो कुछ बतलाया है मैं तीन महीने में करके आ जाऊंगा। हजूर ने कहा बड़ी खुशी की बात है। चले गये। वह आये नहीं तीन महीने में। 6 महीने, 7 महीने के बाद आये। उस वक्त भी पास मैं वहीं बैठा था। तो कहने लगे, महाराज आगे तो मैं छह-छह घन्टे, आठ-आठ घन्टे पूजा पाठ करता था। मन कभी कुछ नहीं कहता था। बिल्कुल स्थिर रहता था। अब तो दो मिनट नहीं ठहरता। आपको पता है क्यों ? पूजा करने में भी मन को खुराक मिल रही है। पढ़ने लिखने में भी मन को खुराक मिल रही है। वह कहता है कोई बात नहीं। एक मकान हो। मालिक हो। उसके कुछ घोड़े हों माफ करना, जो खुले हैं। दरवाजे बन्द हैं। मालिक बेफिकर सोया है। अगर एक दरवाजा भी खुला रह जाये, थोड़ा सा भी, तो मालिक को फिकर होता है घोड़ा कहीं भाग

न जाये। अगर घोड़ा सचमुच कहीं भाग भी जाये, तो पीछे आदमी दौड़ाता है, पकड़ो घोड़े को। हम सब Negative Power के, वह, उसने दाम (जाल) फैलाया है हमको फँसाने के लिये, इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं। जितने साधन दुनियां कर रही है, सबका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। अच्छे कर्म किये, तो स्वर्ग और बैकुण्ठ। बुरे कर्म किये तो नरक और नीची जून। चक्कर दुनियां में हम काट रहे हैं। बेफिकर Negative Power बैठी है। कोई फिकर की बात नहीं। जब महात्मा मिलता है, तो क्या करता है ? इन्द्रियों के घाट ऊपर जाने का पहले ही रास्ता दे देता है। आप देखिए, कितनी फजीलत (महानता) है। पहले ही दिन, रास्ता दे देता है। जब रास्ता खुल गया तो ''ओहो, यह गया। निकल न जाये कहीं।''

यह जितनी दुनियां साधन कर रही है ना, अपराविद्या के साधन, इनसे मुक्ति नहीं है। याद रखो मुक्ति परा से है। परा, आत्मतत्व के बोध को कहते हैं। मन इन्द्रियों से आजाद होकर अपने आपका अनुभव करना और प्रभु का पाना। कितना खोलकर मजमून बयान कर रहे हैं। कहते हैं ऐसे अनेकों उपाय दुनियां कर रही है, मगर मन जाग नहीं सका, जब तक इन्द्रियों के घाट से ऊपर न आओ। अदृष्ट और अगोचर ही बनना पड़ेगा न !

एवड ऊंचा होय को। तिस ऊंचे को जाने तो ॥

जितना वह ऊंचा है, अति सूक्ष्म अगम है, उतने तुम भी सूक्ष्म अगम होगे, तब उसको पा सकोगे। बात तो बड़ी साफ है। तो स्वामी जी महाराज कहते हैं, कि ऐसे अनेकों उपाय हम लोगों ने किये मगर सोया हुआ मन जाग नहीं सका। क्यों ? उसको और खुराक मिल रही है। आपको पता है जो हिन्दू भाइयों में आता है नहीं की शिव भगवान बैठे हैं, प्रकृति, पार्वती भाँग पिला रही थी, नशा पिला रही थी। प्रकृति यह नशा पिला रही थी। आत्मा मन का रंग लेकर मस्त हो रही है, और नशा, होश आने लगी एक और प्याला दे दिया। और क्या है ? यह हालत दुनियां की बन रही है। किन लोगों को नज़र आता है ? जो जाग उठे हैं। कितना भारी फर्क है ? कहते हैं आखिर करते करते हमने क्या किया !

खोजत खोजत सत्गुर पाये। उन यह जुगत कही परमान।

कहते हैं, आखिर हमें सत्स्वरूप हस्ती मिल गई। उन्होंने हमें यह उपाय बताया कि तुम सोई हुई हालत से कैसे जाग सकते हो ? आगे उपाय बतलायेंगे।

सत्संग करो सन्त को सेवो। तन मन करो कुरबान।

कहते हैं कि सत्संग करो, किसी जागते पुरूष की संगत करो।

जहं सत्गुर तंह सत्संगत बनाई।

तो वहां क्या करो ? ''सत्संग करो, सन्त को सेवो।'' उसके सेवने वाले बनो। सत्संग करके। यही नहीं, आये सुना और भाग गए। सेवना क्या है ? कि उसकी, भाव भक्ति से, जो वह कहे, उस पर अमल करो। गुरू अमरदास साहब फरमाते हैं —

सत्गुर सेवन से वड भागी। राम नाम अन्तर धुन जागी॥

वह रमे हुए नाम की जो ध्वनि है, अन्तर में प्रगट हो गई। जो सेवने वाले हैं। मत्थे टेकने वालों का जिकर नहीं है भई, जो जिस्म को मत्था टेकने वाले हैं। उनके सेवने वाले जो हैं। उनके वचनों पर जो फूल नहीं चढ़ाते वह कामयाब नहीं। जो सेवने वाले होते हैं उनके अन्तर में ध्वनि जाग उठती है, अखण्ड कीर्तन जारी हो जाता है, प्रणव की ध्वनि जारी है, तो सेवने का सवाल है।

हमें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता।

मैं यहां आप भाइयों पर सवाल करूंगा। आप भाइयों को, अब या पीछे, जब समरथ पुरूष से उपदेश मिला, आपको मिला है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाने का। उसके लिए, मैं यह कहूंगा, कि हिन्दुस्तान में सौ को उपदेश दिया तो शायद पाँच, सात आदमी बाकायदा हुकम मानने वाले हैं। बाकी सब, मनमानी की, कभी किया, कभी न किया, छोड़ दिया और खबर तक नहीं ली। मगरिब (पश्चिम) में तो सौ लगे, पचानवे करेंगे। जो पाँच छोड़ेंगे, वह भी कहेंगे हम क्यों छोड़ रहे हैं। फिर सेवना काहे का हुआ भई ? बताओ। उसके लिए मैंने यह तजवीज की, गौर से सुनिये ठण्डे दिले से — कि डायरियाँ रखो स्कूल की तरह से। मत्थे टेकने मैंने छुड़ाये। बाहर के सामान मैंने छुड़ाये। डायरी नहीं भेजते। डायरी में अपने जीवन की पड़ताल है। उसमें अपनी कमजोरियों को नोट करना है, आहिस्ता आहिस्ता निकालना है। साथ भजन करना है। कितना वक्त रोज दे रहे हो ? उससे क्या बना है ? महीने के अन्दर रिपोर्ट दो। आपको पता लगे आप कहां हो ? डायरी भेजोगे आपको फिकर होगा। नहीं करोगे तो भी कुछ कहना है। चलो भई, डायरी न भेजो।

क्या करना है। चलो, खत्म हो गया। न कोई पूछे — आप यह याद रखिये, इतने आदमी हो, हर एक के घर में जाना तो मुश्किल है कि नहीं ? आप होश से काम लो।

फिर मैंने यह तजवीज की कि जहां-जहां सत्संग होते हैं, वहां कोई आदमी इतना करे कि जो बीबियाँ मर्द आते हैं उनके जरा Check कर ले कि डायरी रख रहे हैं कि नहीं ? यह भी किया। उसमें भी Failure. अब मैं आप से यह सवाल करता हूं, सबसे, कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे आप कहना मान जाओ। इसके सिवाय और क्या इलाज हो सकता है ? शरीफाना तरीका तो हो चुका। अब और कोई उपाय है ? आप ही बतायें आपसे मैंने क्या कहा था। कुछ नहीं कहा सिवाय इस बात के कि अपने जीवन नेक पाक रखो। जीवन की पड़ताल रखो। जो कमजोरियाँ हैं, उनको दिनों दिन छोड़ो। भजन बाकायदा रोज करो। यह रूह की गिजा (खुराक) है। जिस्म को रोटी न दो जब तक रूह की गिजा न दे लो। यही कहा है ना ! महीने के बाद रिपोर्ट भेजो। सत्संग में आना भजन की बाड़ है, शौक बढ़ता है। सत्संग में जाने के लिए वक्त हुआ, हुआ न हुआ। यहां मेरे ख्याल में कई हजार आदमियों को नाम मिल चुका होगा। यहां कितने बैठे हो ? तीन चार हजार आदमी। तो मेरे बात करने का मकसद — सवाल यह इसलिए मैं आप से कर रहा हूं कि कोई ऐसा जरिया (साधन) है, जिससे आप कहना मानने लग जाये ? वह कहना क्या है ? नेक पाक रहो, डायरी रखो। अरे भई कमजोरियाँ हैं तो उनका तो इलाज हो जायेगा। त्रुटि है तो वह भी दूर हो सकती है। न करने का क्या इलाज है ? करने के लिए क्या उपाय करना है आप बतलायें ! लोग देखते हैं, यह लड़ते हैं कुत्तों की तरह। तुम सत्संग में जाते हो ? सत्संग में यही तालीम मिलती है ? अरे भई तुम लोग सत्संग को बदनाम करते हो।

मन्दा कुत्ता खसम नू गाल।

कोई ऐसा जरिया है, मैं लफ्ज़ जिस दर्द भरे लहजे से कह रहा हूं, आपके दिलों में बैठें, आगे के लिए करने लग जायें। यह मैं हारकर आखिर आपसे प्रार्थना कर रहा हूं कि जो चीज मिली है, उसको करके देखो। न हो तो पकड़ो, तब तो ठीक है ना ! न करने का क्या इलाज है ? खैर ! मैं यही अर्ज़ कर रहा था, कि कुछ करो। आज से ही करने लग जाओ, वक्त निकालते हुए — Where there is a will there is a way.

आप वक्त निकाल सकते हैं। भाग्यों से सत्स्वरूप हस्ती मिली। कुछ रस्ता भी मिल गया। राजा जनक को एक मिला, अष्टावक्र देने वाला। आपको, हर एक को, कुछ न कुछ तजुरबा पहले दिन मिल जाता है। फिर अब लेकर न करो, न सम्भालो, तो उसका क्या इलाज है ? उसके सम्भालने का यही तरीका है कि सत्संग भजन की बाड़ है, सत्संग में आओ।

एक दफा मैंने हजूर से पूछा, कि महाराज सत्संग के मुतल्लिक आपका क्या हुकम है ? कहने लगे कि भई जब तक जिस्म चारपाई पर हिल सकता है, सत्संग जरूर जाओ। हिल सके, यह नहीं कहा, चल सके। जरूर सत्संग में जाओ। तो मैं यह अर्ज़ कर रहा था, कि आखिर सत्स्वरूप हस्ती मिल गई, वह क्या करता है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आने का रास्ता देता है, कुछ न कुछ तजुरबा देता है।

परदा दूर करे आँखन का। निज दरसन दिखलावे। साधो सो सत्गुर मोहि भावे।

सत्संग में न आने का और भजन न करने का कारण क्या है ? यह तन की आसायश (आराम) भई, यह तो रिन्दों का (नशेबाजों का) सिर से गुजरों का, रस्ता है। तन के आराम को न देखो। मन का जो बहाव है उसमें भी न बहो। एक काम करना है, जरूर करो। शेर चलता है दरिया में। सीधा जाता है। शेर बनो भई। तुम आत्मा हो। परमात्मा की अंश हो। शेर के बच्चे हो। शेर बनो। जो इरादा किया है उसको पूरा करो, उसके लिए तन और मन की आसायशें को छोड़ दो। जो हुक्म मिले उस पर फूल चढ़ाओ। मन का कहा न मानो।

If ye love me keep my commandments.

यसू मसीह कहते हैं, कि अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो भई। जिससे प्यार हो उसका कहना मानते हैं कि नहीं ? यही निशानी है। वहां अपने तन और मन की तरफ नहीं जाता, कि भई वह गुरू नाराज न हो जाए।

सत्गुर शब्द सुनो गगना चढ़। चेत लगाओ अपना ध्यान॥

इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ, उसका पहले दिन यही उपदेश मिलता है। नाम या शब्द, जो ज्योति स्वरूप है प्रभु, उसके साथ लगो। उसमें ध्यान टिकाओ। उसमें क्या

होगा ? इन्द्रियों के घाट का नशा उतरेगा कि नहीं ? जागने लग जाओगे। यह जागने का उपाय है।

जागत जागत मन अब जागा। झूठा लगा जहान ॥

जब इन्द्रियों के घाट से ऊपर आए, जिस्म ढेर हो गया मिट्टी का, जगत से भी बेरस हो गये। अन्तर से बेराग हो गया। यह दुनियां की कृयाएं, ''गुजारे मात्र बरतो इन माहि।'' सवाल हल हो जायेगा। असल चीज आत्मा का पति परमात्मा है। बाहर की चीजें झूठी हैं। महात्मा यह नहीं कहते हैं कि घरबार को छोड़ो जंगलों को जाओ। दुनियां में रहो। जिस्म को पालो। उसके ताल्लुकात को पालो। मगर अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ो। यह सबसे बड़ा काम है, मनुष्य जीवन पाकर जो करना है। उसमें मददगार केवल साधु संग और नाम का जपना है।

मन की मदद मिली सुरति को। दोनों अपने महल समान ॥

अब मन को इन्द्रियों का घाट छूटने पर अंतर का रस आने लगेगा।

जब ओह रस आवा। एह रस नहीं भावा ॥

मदद मिल गई न सुरत को उड़ने में ? आसानी हो गई। पिण्डी मन मर गया। काम में आसानी हो गई। जाने में आसानी क्यों नहीं, कि मन बारहर इन्द्रियों के घाट पर लम्पट हो रहा है। वह इसको खींच रही हैं। बस। यही है कारण। जब तक अन्तर खड़े होने को कोई चीज न मिले, अन्तर जाये कैसे ? तो अनुभवी पुरूष आपको पहले नाम की युक्ति, नाम के साथ Contact दे देता है।

कोई जन हरि स्यों देवे जोड़।

वह जोड़ने का काम करता है। फिर उसको रोज रोज बढ़ाओ। उसका रस बढ़ेगा। दुनियां के रस फीके पड़ेंगे आखिर —

बिन शब्द यह मन नहीं जागे। करो कोई चाहे अनेक विधान ॥

कहते हैं इसके जगाने का इलाज केवल नाम या शब्द के साथ लगना है। वह कैसे मिले ? जब सत्स्वरूप हस्ती मिले। वह तुमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लायेगा।

खैंचें सुरत गुरू बलवान।

अभी शब्द लम्बा है। तो यही शब्द जा रहा था, (गुरू अर्जन साहब का) उसी के हसब हाल (समान अर्थ) था। इसलिए, महात्मा जो भी कहते हैं, एक ही बात कहते हैं। जबानदानी (कहने से ढंग) अपनी-अपनी रही। तो गुरू अर्जन साहब फरमाते हैं यही कि इस तरफ हमारी कौन मदद कर सकता है ? कोई जागता पुरूष।

दरब स्यानप ओह न रहते। साध संग ओह दुष्ट बस होते॥

कहते हैं, कि इनके काबू करने का उपाय साधु संग है। सत्गुरू की सोहबत, सन्त की सोहबत। और कोई उपाय नहीं। अनेकों ज्ञान-ध्यान छान्ट लो, फिर भी काम क्रोध वैसे ही है। ईर्षा द्वेश वैसे ही है। जितने बड़े, उतनी ज्यादा आग में जल रहे हैं। ईर्षा की आग सबको जला रही है। इन डाकुओं से बचने के लिए केवल साधु संग है। वह बड़े निकट हैं, काबू में नहीं आ सकते। मिसाल के तौर पर, एक कोठी हो। उसमें मालिक मकान रहता हो। आप अंदर जाना चाहते हो। उसके मकान में पाँच कुत्ते हों। कुत्ते, आप को पता हो, कोठी में दाखिल नहीं होने देते। दूर ही से भोंकते हैं। वह न रोटी देने से खामोश होते हैं, बड़े वफादार होते हैं, याद रखो कुत्ते की वफादारी मशहूर है। गुरबानी में भी आया है, कुत्ते जैसा वफादार बनो। किसी को अन्दर नहीं आने देते। खाह (चाहे) उनको चूरी डालो, पैसे दो, रूपया डालो, कुछ करो। भोंकते रहेंगे। तुम्हारी टांगों से पकड़ लेंगे। फिर ? कैसे काबू हो ? अगर मालिक मकान को हम बाहर से आवाज दें महाराज मैं फलाना हूं, वह सुन ले तुम्हारी आवाज को। वह बाहर आता है। थोड़ा सा कुत्ते हट जाते हैं। तो साधु की संगत में यह चीजें अपने आप भागने लगती हैं, क्योंकि उनके पास वह रस्ता है कि इन्द्रियों के घाट से ऊपर नाम का रस मिल सके। यह अपने आप जाते हैं। एक-एक करके भागता है।

पाँचों लड़के मारके रहे राम लिव लाये।

एक-एक करके निकला है, अपने आप, सलाह करके, कि भई यहां हमारा गुजारा नहीं। यह बरकत कहां से मिलती है ? कितना खोलकर मजमून को पेश किया है ? यही स्वामी जी ने अपने तरीके से बयान किया। बात वही है।

भई सारी बाणियों के लिये हमारे दिल में इज्जत है। जो इस तरफ गये, वह जगाने का

उपाय देते रहे। उसको समझो। एक समाज के लेबल लगाने से या दूसरी समाज के लेबल (ठप्पे) लगाने से तुम्हारी मुक्ति हुई न हो सकती है माफ करना। समाजों का कसूर नहीं। समाजों में हम दाखिल हुये थे, इस गरज को पाने के लिए। हर एक समाज में इसकी तालीम मिलती है। यह तालीम मिलती है, प्रभु को पाने के लिये। कैसे मिलती है ? जिन्होंने पाया है उनकी सोहबत करो। कैसे मिलती है ? अन्तर में तुम्हारे परिपूर्ण परमात्मा है। ज्योति स्वरूप है। अखण्ड की धारा चल रही है। उसके साथ लगने से मन के पाप जाते हैं। यह भई, जिस समाज में भी हो, इसको करने से तुमको मिलेगा। यह अवस्था कब मिलती है ? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आ सकते। बड़ी साफगोई पेश कर रहे हैं। एक ही उपाय है। किसी समाज में हो, अनुभवी पुरूष की सोहबत अख्त्यार करो। किसी समाज में रहो। डॉक्टर बनना है तो किसी डॉक्टर की सोहबत अख्त्यार करो, जो जिस्म की साइन्स का माहिर है। आत्मसिद्ध के जिये, जो आत्म सिद्धी वाला है उसकी सोहबत करो। उसका नाम कुछ रख लो। यही एक उपाय है इससे बचने का।

गुरू को सिर पर राखते। चलते आज्ञा मांहि।

उसके वचनों को सिर माथे पर रखो। और वैसे भी, गुरू उसी का नाम है, जब नाम देता है, साथ हो बैठता है और उस वक्त तक नहीं छोड़ता जब तक उसको धुरधाम न पहुंचा ले। वह जिस्म नहीं। वह पावर है, क्राईस्ट पावर, God Power जो उस Pole पर इजहार (विकास) कर चुकी है, तुम्हें इज़हार करने में, प्रगट करने में मददगार (सहायक) है। जिस्म छोड़ जाती है, मगर वह नहीं छोड़ता। एक बार तवज्जो पड़ी, कहीं नहीं जाता है। उसके आज्ञाकार बनो।

'चलते आज्ञा मांहि।'

जो आज्ञा दी है उसका उल्लंघन न करो।

कहें कबीर उस दास को। तीन लोक डर नांहि।

कबीर साहब कहते हैं, ऐसे दास को तीनों लोकों में कोई डर नहीं। गुरू को हर वक्त हाजर नाजर समझो, पाप करोगे तुम ? बताओ। उसकी आज्ञा है, भई ऐसा मत करो। बहुत अच्छा ! मैं अपनी जिन्दगी का एक वाकया (घटना) सुनाऊँ। हजूर ने एक बार मुझको हुक्म भेजा — यह होता है, जब इन्सान एक तरफ चलता है तो कई लोग गरज-

मन्द लोग कई तरह का प्रापेगन्डा भी करते हैं। तो हजूर ने एक बार हुकम भेजा, कि सिवाय रावी रोड लाहौर का जो सत्संग था, सिवाय उसके कहीं और मत जाओ। बहुत अच्छा, जो हुकम। बड़ा आराम हो गया। एक मकान के बीस कमरे हों। एक नौकर अगर बीस कमरों में बुहारी दिया करता था, उसको कहें, कि भई आगे से तुम एक ही कमरे में बुहारी दिया करना, उसको आराम हो गया कि नहीं ? मुझे वक्त मिल गया। उन दिनों में यह ''गुरमत सिद्धांत'' लिखी गई। बड़ा वक्त था। अब कोई मरे कोई जीये, नहीं जाना। बस। सत्संग किया — हुकम है। यहां तक कि एक रिश्तेदार का लड़का मर गया। वहां भी मैं उसके घर पर नहीं, शमशान भूमि में पहुंच गया। एक आदमी मरने लगा। उसने संदेसा भेजा कि तुम गुरू के वास्ते जरूर जाओ। मैं चाहता था, दर्द भी था, मगर रो पड़ा। भई मैं चाहता हूं तेरी संभाल हो। मेरी शुभ भावना तेरे साथ है। मैं मजबूर हूं कि हुकम को उल्लंघन नहीं कर सकता। मैं नही गया, वह मर गया। जब हजूर लाहौर गये, उसकी घर वाली, बीबी आई। हजूर से शिकायत की कि महाराज वह तड़प तड़प कर मर गया। बुलाया था, नहीं आये। हजूर खड़े थे। कहने लगे, 'कृपालसिंह ! अगर ऐसी हालत हो तो जरूर चले जाया करो।'' मैंने कहा बहुत अच्छा ! अब जहां जाना उसने मर जाना। बड़ी मुश्किल बन गई। जाना ही वहां जहां मरना हो। तो गुरू के हुकम का उल्लंघन नहीं करना, ख्याल रखो। तुम्हें इस लोक क्या अगले लोकों में भी कोई डर नहीं। गुरू गुरू होता है भई। उसका नाम लेवा, हजूर फरमाते थे, उसका नाम लेकर अगर यमों के साथ जाना है, तो ऐसे गुरू और नाम, दोनों को सलाम है। अरे भई अक्षरों का बताना तो नाम नहीं, अक्षरों में Charging है जो तुम्हारी संभाल कर सके, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर अनुभव दे सके, परदा दूर कर दे। गुरू उसी का नाम है जो अंधेरे में प्रकाश करे, थोड़ा करे, दिनों-दिन बढ़ाओ। बड़े प्यार से समझा रहे हैं, एक ही उपाय है काबू करने का पाँच डाकुओं को, साधु संग। बस। वह हर वक्त हाजर नाजर है। हजूर फरमाया करते थे कि पाँच साल का बच्चा बैठा हो, उसके सामने हम कोई गुनाह नहीं करते। अरे वह हाजर नाजर अन्तर बैठा है कोई गुनाह करोगे ? गुरू के सामने सच्चे बनो। लोगों के सामने सच्चे न बनो। हम लोगों के सामने सच्चे बनते हैं। जब आप सब चले जाते हो, समझो वह प्रभु तुम्हारे अन्दर बैठा है। उसकी शरम रखो।

बाबा जयमलसिंह जी महाराज जब उपदेश दिया करते थे — मुझे देहरदून में एक साहब

मिले, जिन्होंने उनसे नाम लिया था। वह कहने लगे वह (बाबा जी) जब नाम देते थे तो कहते थे, अब मैं तुम्हारे अन्तर बैठ गया हूं। अब मेरी शर्म रखो। कोई ऐसा काम न करना जिससे मुझे शर्म हो। यह तरीके हैं समझाने के भई। अब भी नहीं समझोगे तो कब समझोगे ? मनुष्य जीवन भाग्यों से मिला है। यही वक्त है समझने का। अब नहीं समझोगे तो अब ही क्या कई जन्म रोते रहोगे। फिर मनुष्य जन्म मिलेगा तब यह काम करोगे। अब भाग्यों से मिला है। रस्ता भी मिला है। उसकी कमाई करो भई।

कर कृपा मोहे सारंग पान। सन्तन धूड़ सरब निधान।

कहते हैं हे प्रभु हम तेरे फकीर हैं। स्वान्ति बूंद को लोच रहे हैं, हम आपसे यही मांगते हैं कि साधु की संगत दो। सन्तों की धूड़ि बख्शो। सोहबत संगत दो। मिलते कहां हैं माफ करना सन्त ? आपको पता है कि कौरवों पाण्डवों की लड़ाई जब खत्म हुई तो अश्वमेघ यज्ञ सम्पूर्ण हुआ तो लिखा है, आकाश में घन्टा न बजा। भगवान कृष्ण के पास आये तो कहने लगे कि हमारा यज्ञ निष्फल चला गया। अब क्या करें ? वह कहने लगे कि अभी कोई कमाई वाला महात्मा नहीं आया। कहने लगे, महाराज, बड़े साधु महात्मा बुलाये। कहने लगे नहीं, कोई कमाई वाला महात्मा नहीं आया, अनुभवी पुरूष। साधु तो बड़े हैं, महात्मा बड़े हैं, अनुभवी पुरूष कहां हैं ? लम्बे-चौड़े किस्से के बाद सुकृत जी की खबर दी। वह आये। वह आते नहीं थे। कहने लगे मुझे 101 अश्वमेघ यज्ञ का फल दो तब आता हूं। यह कहां से दें ? एक ही सम्पूर्ण नहीं हो रहा। द्रोपदी गई। तो उनको कहा, कि देखिये महाराज, हमने शास्त्रों में पढ़ा है कि किसी अनुभवी पुरूष के पास जाओ तो एक-एक कदम पर एक-एक अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। आप 101 बीच में से काट लो, बाकी मेरे हवाले कर दो। यानी अनुभवी पुरूष मिलता कहां है भई ?

राजा जनक के जमाने में एक निकले अनुभवी पुरूष। कौन ? अष्टावक्र, जो अनुभव दे सके। कौरवों-पाण्डवों के जमाने में एक सुकृत निकला जो घन्टा बजा सका। ऐसे महापुरूषों के दर्शनों का फल एक कदम पर एक अश्वमेघ यज्ञ का फल छोड़ के 101 से भी ज्यादा है। मिलता है। जितने मिलें, खुशी की बात है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि हे महाराज ! हे मालिक ! हम आपकी स्वान्ति बूंद चाहते हैं। आप दया करो। हमें सन्तों को धूड़ी बख्शो। सन्त के अन्तर कौन है ? सन्त कौन है ? वह हमारे जैसा इन्सान

है। मगर उसमें एक फजीलत (बड़ाई) है। वह आत्म-सिद्धि का माहिर है। आप पाया है। तुमको पाने में मददगार होगा। फिर सन्त की तारीफ की है गुरू बाणी में। क्या ?

हमरो भरता बड़ो विवेकी। आपे सन्त कहावे ॥

वह परमात्मा बड़ा विवेकवान है। जब वह कहीं प्रकट होता है, जो, Mouthpeice of God बना, सत्स्वरूप बना, उसका नाम है सन्त। कोई मामूली जैसे भेख का नाम नहीं। पीले, नीले, सफेद और कई रंग के कपड़े पहनने का नाम नहीं। सन्त वह है — यह Highest Degree है रूहानियत की। जो सत्पुरूष को जान गया वह सन्त है। उसके पास बैठने से तुम प्रभु को देखने वाले हो जाओगे। तो कहते हैं, हे प्रभु हम आपसे यही दान मांगते हैं। बड़ा ऊंचा दान माँगा है ना ! साधु आ गया, उसके साथ सब कुछ पा गया कि नहीं ?

एक बादशाह का जिकर आता है, उसने मीना बाजार लगवाया था। बड़ी-बड़ी अजीब चीजें, तोहफे रख दिये वहां। अपनी रईयत (प्रजा) को छुट्टी दे दी कि हर एक आदमी को हक है, कोई चीज जो लेनी हो, वह ले ले, मगर एक बार ! Final एक चीज। जो चाहे उठा ले। एक से एक बढ़कर चीज थी। किसी ने कोई उठाई, किसी ने कोई उठाई। एक लड़की थी। जाहिरा बड़ी भोली भाली, मगर बीच में बड़ी सियानी थी। देख रही थी कि ऐसा आला (उत्तम) यह जो मीना बाजार बना है, क्या कहना है, बड़ी तारीफ करती जाये। ख्याल यह आया कि जिसने इतना सुन्दर मीना बाजार लगाया वह आप कैसा होगा ? यह ख्याल था दिल में। चली जाये, तारीफ करती जाये। मीना बाजार का वक्त खत्म होने वाला था, लोग कहने लगे, पगली, क्या बातें करती है ? चीज को हाथ लगाओ और उठाओ। मगर वह अपनी धुन में पक्की थी कि इसके लगाने वाला कौन है ? वह ऊपर बैठा था, बादशाह, सिरे पर। वहां गई। देखा, बादशाह बैठा है। वहां पर लपकी। बादशाह दिल में तो खुश हुआ, चलो भई सारी रईयत में एक तो निकला जो मुझे चाहने वाला है। मेरी चीजों के चाहने वाले तो सब हैं।

दात प्यारी विसरेया दातारा। जाने नाहीं मन विचारा ॥

दिल में तो खुश हुआ, ऊपर से थोड़ा मुंह बनाकर कहा, ''पगली ! कहां आ रही है ? जाओ किसी चीज को हाथ लगाओ और ले जाओ।'' उसने हील की न दलील, जाकर

बादशाह के सिर पर हाथ रख दिया। कहने लगी, बादशाह ! बोला हाँ। आप किसके हो ? कहने लगा, तुम्हारा ! यह मीना बाज़ार किसका है ? कहने लगा, मेरा ! अब किसका है ? वह भी तेरा है ! हम जुज्वी नजर से (व्यक्तिगत दृष्टि से) देखते हैं। ऐसा पुरूष जिसके अन्तर वह सचमुच प्रकट है, मिलता कहां है ? अगर उसके तुम हो गये, फिर ! परमात्मा तुम्हारा और सारी कायनात तुम्हारी हो गई।

जे तू मेरा हो रहे तो सब जग मेरा होय।

यह गुरबाणी में आता है। महापुरूषों की बाणियां यह कहती है। इसमें शक नहीं कि ऐसे महापुरूष कम हैं। दुनियां गुरूडम और साधु के नाम से नफरत कर रही है। कारण ? कि साधु सचमुच नहीं। भेस है। Acting है Posing है। इन्द्रियों के घाट के साधन सिखाने वाले हैं। इसके ऊपर न खुद गये न किसी को ले जा सकते हैं। तल्ख तजुरबा (कटु अनुभव) हमारा मजबूर करता है, हमें गुरू नहीं चाहिए, हमें किताब अच्छी है। दया करो। मगर सच्चे महात्मा के बगैर जीव की कल्याण न हुई न होगी। मुसलमान फकीर क्या कहते हैं ?

गुफत पैगम्बर कि हक फर्मूदा अस्त

कि खुदा ने यह फरमाया है कि —

मन न गुंजम हेच दर बालाओ पस्त।

अर्थात् मैं इतना बड़ा हूं कि पस्तियों में और ऊंचाइयों में नहीं समा सकता। न आसमान न जमीन न पाताल। यह सारी कायनात (सृष्टि) मेरे समाने के काबिल नहीं, मैं इतना बड़ा हूं। मगर —

दर दिले मोमिन बिगुजंम ई अजब

मगर एक मोमिन के हृदय में मैं समा जाता हूं।

गर मरा खाही अजाँ दिलहा तलब।

अगर मुझे ढूंढते हो, जाओ वहाँ। तो वह एक चलता-फिरता एक ऐसा पोल है, इन्सानी — हम भी हैं, वैसे, माफ करना। हममें और उसमें यही फर्क है, कि उसमें वह प्रकट हो चुका है, हमारे अंतर है, अभी गुप्त है। गुरू अमरदास साहब ने बड़ी साफगाई की। फरमाते हैं —

हम नीच से उत्तम भए भाई।

हम कभी इन्द्रियों के घाट पर थे, तुम्हारी तरह। अब उत्तम पदवी को पा गये हैं। लम्बा-चौड़ा बयान करते हुए फरमाते हैं —

जब ते गुरमत बुध पाई।

गुरू की मत जब मिली तो। चीज हम में है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, क्या करना चाहिये। मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिला है। किसी सत्स्वरूप हस्ती की सोहबत करो। चीज तुममें है। परमात्मा कहीं आसमानों पर नहीं, ग्रन्थों पोथियों में सोया नहीं, माफ करना। वहां उसका जिकर है। पढ़ने से शौक बनता है। उसमें यह जिकर है कि अनुभवी पुरूषों ने कैसे प्रभु को पाया है ? सिट्टा निकाला है कि नाम से। नाम तुम्हारे अन्त है। अदृष्ट और अगोचर है। ज्योति का विकास है। उसमें अखण्ड कीर्तन है। प्रणव की ध्वनि हो रही है। जब तक बाहरी नामों से चलकर, अक्षरी नामों से चलकर, उसके साथ तुम नहीं लगते जब तक कल्याण नहीं। उस तरफ जाने के लिए, इन्द्रियों के भोगों-रसों में जो लम्पट हैं, वह उधर नहीं जा सकते। उधर से हटना होगा। उसके लिये नेक पाक सदाचारी जीवन बनाओ। Ethical life is stepping stone to spirituality.

अगर इस घर में तुम जाग उठोगे डाकू भी नहीं आयेंगे। घर में एक आदमी भी जागता हो, चोर नहीं आते याद रखो। चोर तभी आते हैं, जब कोई सो रहा हो। जब बहुत हो कलोरोफार्म का रूमाल डालकर थोड़ा और सुला देते हैं। जो मरजी है करके चले जायें। क्योंकि जाग नहीं सकता।

साबत पूंजी सत्गुरू संग। नानक जागे पारब्रह्म के रंग।

कहते हैं, सन्त की सोहबत में तुम अपनी पूंजी को संभाल के ले जाओगे। कहते हैं क्या होगा ? उनकी कृपा से तुम पारब्रह्म के नशे को पा जाओगे, जाग उठोगे। यह नशा तुममें है। अब भी है।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।

दिन-रात उसका खुमार है, सरूर है, नशा है, आनंद है।

सो जागे जिस प्रभु कृपाल। एह पूंजी साबत धन माल॥

कहते हैं, अब जाग कौन सकता है ? जिसको वह जगाये। वह प्रभु आप दयाल हो। दया करे, कृपा करे। वह कृपा करे तो क्या होता है ?

कृपा करे तां सत्गुरू मेले।

और वह (सत्गुरू) क्या करता है ?

हर हर नाम धियाई।

नाम से तुमको जोड़ देता है, जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर है। तुम्हारे घर में है। कहते हैं, इस तरह से वह अपनी पूंजी साबत लेकर चला जाता है, नहीं तो हम अपनी पूंजी को गंवा जाते हैं। सुरति है ना, फैलाव में है। कहीं बच्चों में, रूपये पैसे जायदादों में, फिर मरकर कहां जाना ? जहां आसा तहां बासा। बार-बार दुनियां में ! जबसे हमारी आत्मा प्रभु से जुदा हुई अभी तक वापस नहीं गई। बात तो यह है। बड़े प्यार से कितना खोल खोलकर समझाया। यही स्वामी जी महाराज ने फरमाया और और महापुरूष बतलाते हैं। भई एक लफ्ज़ में अगर परमार्थ के मजमून को अदा करना हो तो नाम, साधु, सन्त, महात्मा, गुरू का कह लो। उसके साथ लग गये, समझो — मौलाना रूम साहब फरमाते हैं — ''अगर तुम किसी अनुभवी पुरूष के नजदीक आ गये, समझो तुम परमात्मा के नजदीक आ गये।'' क्योंकि उसमें वह इज़हार (विकास) कर रहा है। बिजली सारे परिपूर्ण है। जहां पावर हाऊस है वहां तुम्हारे सारे काम पूर्ण होंगे ना !

जो परिपूर्ण है तुमको क्या देगा ? उस Pole पर वह ताकत इज़हार कर रही है। उससे जो Contacted (जुड़ा) है, उससे फायदा उठा लो। वह दुनिया में क्यों इज़हार करती (प्रकट होती) है ? जीव भूले भटके जा रहे हैं दुनियां में, उनको उसके साथ जोड़ने के लिए। बस। वह भी माफ करना, वह Pole भी, हुकम में चलता है। जिसको यह प्रभु चाहता है, उसको पहुंचा देता है।

नदर करे तौं गुरू मिलाये।

वह उसकी नजर (दया) पर है। वह क्या करता है ? नाम के साथ जोड़ता है। नाम के साथ कौन जुड़ता है।

धुर करम पाया तुध जिनको। से नाम हरि के लागे।

जो धुर से मालिक आप दया करे वह नाम के साथ लगते हैं। उसकी निशानी क्या है ?

कहो नानक तैं सुख होवा।

तो कहते हैं, उसके साथ मिलने से सुख, शांति मिलती है। उसकी निशानी क्या है ?

तित घर अनहत वाजे।

उसके अन्तर अनहत की ध्वनि जाग उठती है। यह निशानी है उसकी। या तो अनहत की ध्वनि जागी या ज्योति का विकास हुआ। यह निशानी है। जिसके अन्तर यह प्रकट हुई उसे सुख ही सुख है, आनन्द ही आनन्द है। आत्मा चैतन्य है। महा चैतन्य होगी, और ज्यादा मस्ती को पायेगी, और क्या होगा ? तो यह श्री गुरू अर्जन साहब का शब्द था, जो आपके सामने रखा गया। सुनने से कल्याण नहीं। जो बात समझ में आई उस पर अमल करो। पहले अभी मैंने अर्ज किया, कोई उपाय हो, जिससे आप कहना मान जाओ। आगे नहीं माना तो आज से ही भजन शुरू करो। रोटी न खाओ जब तक भजन न कर लो। न बने — उसके लिए जीवन का ख्याल रखो अपने का। घरों बारों में कुत्तों की तरह न लड़ो माफ करना। जबान नीम की घुट्टी हुई न आवे। मीठी जबान रखो। मीठी जबान से बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं। एक कड़वे वचन से माफ करना, महाभारत का युद्ध हुआ था। एक वचन से ! वह क्या था ? कौरव के लड़के आये। द्रोपदी के महल में आये। वहां फर्श ऐसा था, दूर से मालूम होता था यह पानी है। उन्होंने कपड़े ऊपर खेंचे तो हंसकर कहने लगी ''अन्धी के अन्धे।'' सारे हिन्दुस्तान की सभ्यता नाश हो गई। हमारे घरों घरों में माफ करना, यही कुछ हो रहा है। ❑

✦ ✧ ✦

रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.